

# इस्लाम क्या है? (4 का भाग 3): इस्लाम की आवश्यक धारणा

रेटिंग: 2.3 TOP20

विवरण:

श्रेणी: [लेख इस्लाम की मान्यताएं इस्लाम क्या है](#)

द्वारा: IslamReligion.com

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 09 Nov 2021

आस्था के कई पहलू हैं जिनमें इस्लाम का पालन करने वाले को दृढ़ विश्वास होना चाहिए। उन पहलुओं में से सबसे महत्वपूर्ण छह हैं, जिनमें "आस्था के छह लेख" के रूप में जाना जाता है।

## 1) ईश्वर में विश्वास

इस्लाम सख्त एकेश्वरवाद का समर्थन करता है और ईश्वर में विश्वास उनके दिल में आस्था जगाता है। इस्लाम एक ईश्वर में विश्वास करना सिखाता है, जो न तो जन्म देता है और न ही खुद पैदा हुआ है, और दुनिया की देखभाल करने में उसका कोई हिस्सा नहीं है। वही जीवन देता है, मृत्यु देता है, भलाई लाता है, दुःख देता है, और



अपनी सृष्टि के लिए जीविका प्रदान करता है। इस्लाम में ईश्वर ब्रह्मांड का एकमात्र निर्माता, रब, पालनहार, शासक, न्यायाधीश और उद्धारकर्ता है। ज्ञान और शक्ति जैसे गुणों और क्षमताओं में उसके समान कोई नहीं है। सभी पूजा, उपासना और भक्तभाव ईश्वर के लिए होना चाहिए और किसी के लिए नहीं। इन अवधारणाओं का कोई भी उल्लंघन इस्लाम के आधार को नकारता है।

## 2) स्वर्गदूतों में विश्वास

इस्लाम के अनुयायियों को क़ुरआन में वर्णित अनदेखी दुनिया में विश्वास करना चाहिए। स्वर्गदूत इस संसार में ईश्वर के दूत हैं, प्रत्येक को एक विशिष्ट कार्य सौंपा गया है। उनके पास कोई स्वतंत्र इच्छा या अवज्ञा करने की क्षमता नहीं है; ईश्वर के वफादार सेवक होना उनका स्वभाव है। स्वर्गदूतों को

उपदेवता नहीं मानना चाहिए, या उनकी स्तुतियां पूजा नहीं करनी चाहिए; वे केवल ईश्वर के सेवक हैं, जो उसकी हर आज्ञा का पालन करते हैं।

### 3) पैगंबरो और दूतों में विश्वास

इस्लाम एक सार्वभौमिक और समावेशी धर्म है। मुसलमान पैगंबरो में विश्वास करते हैं, न केवल पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे), लेकिन इब्राहीम और मूसा सहित हब्रू पैगंबर, साथ ही नए युग के पैगंबरो, यीशु और याह्या पर भी विश्वास करते हैं। इस्लाम बताता है कि ईश्वर ने केवल यहूदियों और ईसाइयों के लिए पैगंबर नहीं भेजे, बल्कि उन्होंने दुनिया के सभी देशों में पैगंबरो को एक केंद्रीय संदेश (एक ईश्वर की पूजा करना) के साथ भेजा। मुसलमानों को कुरआन में वर्णित ईश्वर द्वारा भेजे गए सभी पैगंबरो पर विश्वास करना चाहिए, उनके बीच कोई भेद कएि बना। मुहम्मद को अंतिम संदेश के साथ भेजा गया था, और उनके बाद आने वाला कोई पैगंबर नहीं है। उनका संदेश अंतिम और शाश्वत है, और उनके माध्यम से ईश्वर ने मानवता के लिए अपना संदेश पूरा किया।

### 4) पवित्र ग्रंथों में विश्वास

मुसलमान उन सभी पुस्तकों में विश्वास करते हैं जिन्हें ईश्वर ने अपने पैगंबरो के माध्यम से मनुष्यों के लिए भेजा है। इन किताबों में इब्राहीम की किताबें, मूसा की तौरात, दाऊद की ज़बूर, और यीशु मसीह की इंजील शामिल हैं। इन सभी पुस्तकों का एक ही स्रोत (ईश्वर), एक ही संदेश था, और सभी सत्य में प्रकट हुए थे। इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें सच्चाई में संरक्षित किया गया है। मुसलमानों (और कई अन्य यहूदी और ईसाई विद्वानों और इतिहासकारों) ने पाया कि आज अस्तित्व में किताबें मूल ग्रंथ नहीं हैं, जो वास्तव में खो गए हैं या बदल गए हैं, और/या बार-बार अनुवाद कएि गए हैं तथा मूल संदेश खो रहे हैं।

जैसा कि ईसाई पुराने नियम को पूरा करने के लिए नए नियम को देखते हैं, मुसलमानों का मानना है कि पैगंबर मुहम्मद ने यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और अन्य सभी धर्मों के धर्मग्रंथों और सिद्धांतों में मानवीय त्रुटि को ठीक करने के लिए देवदूत जबरिल के माध्यम से ईश्वर से रहस्योद्घाटन प्राप्त किया था। यह रहस्योद्घाटन कुरआन है, जो अरबी भाषा में प्रकट हुआ था, और आज भी अपने प्राचीन रूप में पाया जाता है। यह जीवन के सभी क्षेत्रों आध्यात्मिक, लौकिक, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में मानवजातिका मार्गदर्शन करने का प्रयास करता है। इसमें जीवन के संचालन के लिए निर्देश शामिल हैं, कहानियों और दृष्टान्तों से संबंधित हैं, ईश्वर के गुणों का वर्णन करते हैं, और सामाजिक जीवन को नियंत्रित करने के सर्वोत्तम नियमों की बात करते हैं। इसमें हर किसी के लिए, हर जगह और सभी समय के लिए निर्देश हैं। आज लाखों लोगों ने कुरआन को कंठस्थ कर लिया है, और आज और अतीत में

मली कुरआन की सभी प्रतियां एक जैसी हैं। ईश्वर ने वादा किया है कि वह समय के अंत तक कुरआन को परिवर्तन से बचाएगा, ताकि मानवता के लिए मार्गदर्शन स्पष्ट हो और सभी पैगंबरों का संदेश इसे चाहने वालों के लिए उपलब्ध हो।

## 5) मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास

मुसलमानों का मानना है कि एक दिन आएगा जब सारी सृष्टि निष्पत्त हो जाएगी और कर्मों का न्याय करने के लिए उनको न्याय के दिन पुनर्जीवित किया जाएगा। इस दिन, सभी ईश्वर की उपस्थिति में एकत्रित होंगे और प्रत्येक व्यक्ति से दुनिया में उनके जीवन और उन्होंने इसे कैसे जीया, इसके बारे में पूछताछ की जाएगी। जो लोग ईश्वर और जीवन के बारे में सही विश्वास रखते हैं, और धार्मिक कर्मों के साथ उनके विश्वास का पालन करते हैं, वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, भले ही वे अपने कुछ पापों के लिए नर्क में कुछ सजा काट सकते हैं अगर ईश्वर अपने अनंत न्याय से उन्हें माफ न करे तब। जहाँ तक इसके अनेक प्रकार से बहुदेववाद में गिरि हुए लोग हैं, वे नर्क में प्रवेश करेंगे, और वहाँ से कभी नहीं निकलेंगे।

## 6) ईश्वरीय नरिणय में विश्वास

इस्लाम इस बात पर जोर देता है कि ईश्वर के पास सभी चीजों की पूरी शक्ति और ज्ञान है, और उसकी इच्छा और उसके पूर्ण ज्ञान के अलावा कुछ भी नहीं होता है। जैसे ईश्वरीय नरिणय, भाग्य या "नयित" के रूप में जाना जाता है, उसे अरबी में अल-क़दर के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक प्राणी का भाग्य पहले से ही ईश्वर को ज्ञात है।

हालाँकि यह विश्वास मनुष्य की अपनी कार्यशैली चुनने की स्वतंत्र इच्छा के विचार के विपरीत नहीं है। ईश्वर हमें कुछ भी करने के लिए मजबूर नहीं करते हैं; हम चुन सकते हैं कि उसकी आज्ञा का पालन करना है या अवज्ञा करना है। हमारे करने से पहले ही ईश्वर को पता चल जाता है। हम नहीं जानते कि हमारी नयित क्या है; परन्तु ईश्वर सब बातों को जानता है।

इसलिए हमें दृढ़ विश्वास रखना चाहिए कि जो कुछ भी हमारे साथ होता है, वह ईश्वर की इच्छा के अनुसार और उसके पूर्ण ज्ञान के साथ होता है। इस दुनिया में ऐसी चीजें हो सकती हैं जो हमें समझ में नहीं आती हैं, लेकिन हमें भरोसा रखना चाहिए कि ईश्वर के पास सभी चीजों का ज्ञान है।

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/4>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2024 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।